ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 106-108

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

किन्नर समाज–एक सम्मानविहिन जज्बात (थर्ड जेंडर अर्थात् ट्रांस जेंडर अर्थात् तिसरी ताली)

राजीव कुमार श्रीवास्तव

असि0प्रोफे0, समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पी0जी0 कालेज, सुदिष्टपुरी–रानीगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 30.10. 2019, Revised- 06.11.2019, Accepted - 11.11.2019 E-mail: archanasri2610@gmail.com

सारांश : *ट्रांस जेंडर , किन्नर और तमाम तरह के अलग– अलग नाम से पहचाने जाने वाले असल में एक लैंगिक पहचान है। कुछ बाहरी शरीर Interset (शारीरिक लिंग) से समाज द्वारा पहचाने जाते हैं और कुछ मनोवैज्ञानिक लिंग Psychological set के द्वारा खुद की पहचान को समाज में स्थापित करते हैं । दोनों किन्नर में फर्क इतना सा ही है कि कुछ को जन्म से ही समाज द्वारा ट्रांस की पहचान मिल जाती है, हालांकि यह भी विवादित विषय है, क्यूंकि यह interset लोग भी बाद में खुद की पहचान स्थापित करते हैं और सहानुभूति द्वारा पहचान पा भी लेते हैं, लेकिन सबसे बड़ी समस्या उन ट्रांस जेंडर (किन्नर) की आती है, जिनका शारीरिक लिंग, मनोवैज्ञानिक लिंग से भिन्न होता है। (Biological set is different than psychological set) उनको लोग बचपन से एक अलग शरीर से जानते हैं और बाद में खुद को अलग जेंडर में बदल लेते हैं । यही लोग सबसे ज्यादा भेदभाव और हिंसा का शिकार होते हैं । किन्नर होना या ट्रांस जेंडर होना कोई अलौकिक घटना नहीं है, यह एक प्राकृतिक घटना है । कोई जानबूझ के किन्नर नहीं बनता । ज्यादातर कहानी लिखने वाले लोग interset जन्म से पैदा होने वाले किन्नर के बारे में लिखते हैं और बार बार किन्नर डेरे से जुड़ी कहानी लिखते है और उनको दया का पात्र बना देते हैं, जबकि कहानी इससे बिल्कुल उलट है । डेरे में रहने वाले भी ट्रांस जेंडर ही होते हैं और उन लोगों ने भी जेंडर बदला होता है । यह कोई बुरी बात नहीं और न ही दया दिखाने जैसा कोई कारण है। अगर सभी को स्वीकार कर लिया जाय, तो फिर भीख मांगने की नौबत ही न आए। एक बात और भी है कि बहुत ही कम लोग द्वी–लिंगीय पैदा होते है, इन्हीं लोगों के बारे में सोच कर हम सभी ट्रांस जेंडर को भी द्वि–लिंगीय मान लेते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ट्रांस जेंडर जान बूझ कर जेंडर बदलते हैं, वह भी पैदाइशी तृतीय प्रकृति के लोग होते है, लेकिन समाज इनके लैंगिक पहचान के कारण मर्द मान लेते है, जबकि वह मर्द शरीर में औरत है। वहीं असली किन्नर भी है ।*

कुंजी शब्द – ट्रांसजेंडर, किन्नर, सहानुभूति, शारिरिक लिंग, जेंडर, भेदभाव, हिंसा, अलौकिक घटना।

कैसे और कब हुई थी किन्नरों की उत्पत्ति– जिस तरह स्त्री और पुरुष एक समाज में रहते हैं, उसी तरह इस दुनिया में किन्नरों का भी एक समाज है। मनुष्य जाति की तरह ही किन्नरों मे भी दो प्रकार होते हैं– एक किन्न पुरुष और दूसरी किन्नरी। इसे भी किन्न पुरुष ही कहा जाता है। मनुष्य जाति में हम सब जानते हैं कि स्त्री और पुरुष होते हैं। उनके जन्म की बात को भी हम जानते हैं कि कैसे होती है, लेकिन किन्नरों की उत्पत्ति कब और कैसे हुई, इसे हम में से बहुत ही कम लोग जानते हैं, बहुत पहले प्रजापति के यहां एक इल नाम का पुत्र था। बड़ा होकर यही इल बड़ा ही धर्मात्मा राजा बना। कहते हैं राजा इल को शिकार खेलने का बड़ा शौक था। इसी शौक के कारण राजा इल अपने कुछ सैनिकों के साथ शिकार करने एक वन को गए। जंगल में राजा ने कई जानवरों का शिकार किया, लेकिन इसके बाद भी उनका मन नहीं भरा, वो और शिकार करना चाहते थे। इसी चाहत में वो जंगल में आगे बढ़ते चले गए और उस पर्वत पर पहुंच गए, जहां भगवान शिव माता पार्वती के साथ विहाग कर रहे थे, कहते हैं भगवान शिव ने माता पार्वती को खुश करने के लिए खुद को स्त्री बना लिया था। जिस समय भगवान शिव ने स्त्री रूप धारण किया था, उस समय जंगल में जितने जीव–जंतु, पेड़–पौधे थे, सब स्त्री बन गए। चूँकि राजा इल भी उसी जंगल में मौजूद थे, सो राजा इल भी स्त्री बन गए और उनके साथ आये सारे सैनिक भी स्त्री बन गए। राजा इल अपने आप को स्त्री रूप में देख बहुत दुखी हुए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आखिर ऐसा कैसे हो गया, लेकिन जैसे ही उन्हें यह पता चला कि भगवान शिव के कारण वो सब स्त्री बन गए, तब राजा इल और ज्यादा चिंतित और डर गए। अपने इसी डर के कारण राजा इल भगवान शिव के चरणों में पहुंच गए। जहां उन्होंने भगवान शिव से अपने आप को पुरुष में परिवर्तित करने की अपील की, लेकिन भगवान शिव ने राजा इल से कहा कि तुम पुरुषत्व को छोड़कर कोई और वरदान मांग लो, मैं दे दूंगा। लेकिन इल ने दूसरा वरदान मांगने से मना कर दिया और वहां से चले गए। वहां से जाने के बाद राजा इल माता पार्वती को प्रसन्न करने में लग गए। राजा इल से माता पार्वती ने

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहा, तब राजा ने अपनी सारी कहानी बता कर अपना पुरुषत्व वापस लौटाने का वरदान माता पार्वती से मांगा, लेकिन माता पार्वती ने राजा से कहा कि तुम जिस पुरुषत्व का वरदान चाहते हो, उसके आधे हिस्से के दाता तो खुद महादेव हैं, मैं तो सिर्फ आधा भाग ही दे सकती हूँ, याँनि तुम अपना आधा जीवन स्त्री रूप में और आधा जीवन पुरुष के रूप में व्यतीत कर सकते हो। अतः तुम कब स्त्री रूप में और कब पुरुष रूप में रहना चाहते हो यह सोच कर मुझे बता दो। तब राजा ने काफी सोच कर माता पार्वती से कहा कि "हे, माँ मैं एक महीने स्त्री के रूप में और एक महीने पुरुष के रुप में रहना चाहता हूं।'' इस पर माता पार्वती ने तथास्तु कहते हुए राजा इल से ये भी कहा की जब तुम पुरुष के रुप में रहोगे, तो तुम्हें अपना स्त्री रूप नहीं याद रहेगा और जब तुम अपने स्त्री रुप में रहोगे तो तुम्हें अपने पुरुष रुप का कुछ याद नहीं रहेगा। इस तरह राजा इल माता पार्वती से एक महीने पुरुष इल और एक महीने स्त्री इला के रूप में रहने का वरदान प्राप्त कर लिए, परंतु राजा के सारे सैनिक स्त्री रूप में ही रह गए।

किवदंती के रूप में कहते हैं कि वो सारे सैनिक एक दिन स्त्री इला के साथ वन में घूमते–घूमते चंद्रमा के पुत्र महात्मा बुद्ध के आश्रम में पहुंच गए। तब चंद्रमा के पुत्र महात्मा बुद्ध ने इन स्त्री रूपी सैनिकों से कहा कि तुम सब किन्न पुरुषी इसी पर्वत पर अपना निवास स्थान बना लो। आगे चलकर तुम सब किन्न पुरुष पतियों को प्राप्त करोगे। इस तरह से किन्नरों की उत्पत्ति हुई ।

किन्नरों की जिंदगी के वो रंग जो अनदेखे हैं– हमारे समाज का ताना–बाना मर्द और औरत से मिलकर बना है, लेकिन एक तीसरा जेंडर भी हमारे समाज का हिस्सा है। इसकी पहचान कुछ ऐसी है, जिसे सभ्य समाज में अच्छी नजर से नहीं देखा जाता। समाज के इस वर्ग को थर्ड जेंडर, किन्नर या हिजड़े के नाम से जाना जाता है।

हिन्दुस्तान ही नहीं, पूरे दक्षिण एशिया में इनके दिल की बात और आवाज कोई सुनना नहीं चाहता, क्योंकि पूरे समाज के लिए इन्हें एक बदनुमा दाग समझा जाता है। लोगों के लिए ये सिर्फ हंसी के पात्र हैं।

लेकिन, हाल ही में इनकी जिंदगी में झांकने की कोशिश की बांग्लादेश की एक फोटोग्राफर शाहरिया शर्मीन ने। इनकी जिंदगी के जो रंग आज तक किसी ने नहीं देखे थे। उन रंगों को शर्मीन ने अपनी तस्वीरों में उतारा। शर्मीन के इस बेहतरीन काम के लिए इस साल उनका नाम मैग्नम फोटोग्राफर जूरी अवॉर्ड के लिए चुना गया है।

किन्नरों पर चर्चा तहजीब के खिलाफ – शर्मीन के मुताबिक उनकी परवरिश एक कट्टरपंथी परिवार में हुई। वो बचपन से अपने आसपास किन्नरों को देखती थीं, लेकिन कभी भी परिवार के साथ उनके बारे में बात नहीं कर पाती थीं, इसकी इजाजत ही नहीं थी। किन्नरों के बारे में चर्चा करना तहजीब के खिलाफ समझा जाता था। उन्हें समाज का हिस्सा ही नहीं माना जाता था। इसी बात ने शर्मीन को किन्नरों की जिंदगी को नजदीक से समझने की प्रेरणा दी और उन्होंने भारत और बांग्लादेश में रहने वाले किन्नरों की तस्वीरें खींचीं जनाने होते हैं, किन्नरों के हाव–भाव – शर्मीन के मुताबिक ज्यादातर किन्नर जन्म से मर्द होते हैं, लेकिन उनके हाव–भाव जनाने होते हैं। इनका शुमार ना मर्दों में होता है और ना औरतों में, लेकिन ये खुद को दिल से औरत ही समझते हैं। इन्हें कोई ट्रांसजेंडर के नाम से जानता है, तो कोई ट्रांससेक्सुअल, लेकिन ज्यादातर लोग इन्हें किन्नर या हिजड़े के नाम से ही जानते और पुकारते हैं।

अपनी कमाई गुरु को देते हैं, किन्नर – तीसरे जेंडर का होने पर जिन्हें उनके अपने खुद से दूर कर देते हैं, उन्हें किन्नर समाज पनाह देता है। इनके समाज के कुछ कायदे कानून होते हैं, जिन पर अमल करना लाजमी है। ये सभी परिवार की तरह एक गुरु की पनाह में रहते हैं, ये गुरु अपने साथ रहने वाले सभी किन्नरों को पनाह, सुरक्षा और उनकी हर जरूरत को पूरा करते हैं। सभी किन्नर जो भी कमा कर लाते हैं, अपने गुरु को देते हैं। फिर गुरु हरेक को उसकी कमाई और जरूरत के मुताबिक पैसा देते हैं। बाकी बचे पैसे को सभी के मुस्तकबिल के लिए रख लिया जाता है।

कायदे–कानून तोड़ने वाला बख्शा नहीं जाता– गुरु ही इन किन्नरों का मां–बाप और सरपरस्त होता है। हरेक किन्नर को अपने गुरु की उम्मीदों पर खरा उतरना पड़ता है, जो ऐसा नहीं कर पाते, उन्हें ग्रुप से बाहर कर दिया जाता है। हर गुरु के अपने अलग कायदे–कानून होते हैं। इन्हें तोड़ने वालों को बख्शा नहीं जाता। हरेक किन्नर को एक तय रकम कमाना जरूरी होता है, जो ऐसा नहीं कर पाते, उनसे खदिमत के दूसरे काम लिए जाते हैं, जो लोग अपना लिंग बदलवाकर अपनी इच्छा से इनके ग्रुप में शामिल होना चाहते हैं, ये उनकी भी मदद करते हैं।

हिकारत की नजर से है देखा जाता – किन्नरों के ग्रुप में शामिल होने का मतलब है, एक नई पहचान को अपनाना। ये नई पहचान बाहरी समाज के लिए किसी अछूत से कम नहीं होती। दक्षिण एशिया में हिजड़ों की एक तारीख रही है, लेकिन हर दौर में इन्हें हिकारत की नजरों से देखा गया है। राजा, महाराजाओं के दौर में इन्हें दरबार

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

में नाचने–गाने के लिए रखा जाता था। मुगलों के दौर में इनका इस्तेमाल कनीजों के पहरेदार के तौर पर होता था, लेकिन इज्जत किसी भी दौर में नसीब नहीं हुई।

दुआएं लेते हैं , लेकिन सम्मान नहीं देते – शादी–ब्याह में नाच–गाकर या किसी बच्चे की पैदाइश पर जश्न मनाकर ये अपनी कमाई करते हैं, हाँलाकि कमाई का एक नया बदसूलकी एवं घिनौना रूप भी सामने आया है जैसा कि ट्रेन में मारपीट कर पैसा लेने का, माना जाता है कि जिस परिवार को किन्नर समाज दुआ देता है, वो खूब फलता–फूलता है। पुराने दौर में लोग इनके नाम का पैसा निकालते थे और इनकी झोली भर देते थे। आमतौर पर धारणा है कि किन्नरों का दिल नहीं दुखाना चाहिए, लेकिन इन्हें सम्मान जैसी चीज भी नसीब नहीं होती, जोकि किसी भी इंसान का हक है। हालांकि अब इनके कमाने का तरीका भी बदल गया है। अपने ग्रुप से निकाल दिए जाने के बाद ये सड़कों पर, पार्कों, बसों, ट्रेनों, चौराहों, कहीं भी मांगते हुए नजर आ जाते हैं। लोगों की नजर में अब इनकी पहचान भिखारी की हो गई है। दक्षिण एशिया में इनकी अच्छी–खासी आबादी है, लेकिन समाज में इनके लिए जगह नहीं है। बांग्लादेश में तो हाल और भी बुरा है। इसीलिए किन्नर समाज की एक बड़ी तादाद भारत आ गई है।

इनकी भी हैं ख्वाहिशें – शर्मीन कहती हैं कि जब तक वो किन्नरों से नहीं मिली थीं, उनके जहन में इस समाज के लिए तरह–तरह के पूर्वाग्रह थे, लेकिन जब उन्हें करीब से जाना तो पता चला कि उनके भी वही एहसास और ख्वाहिशें हैं, जो किसी भी मर्द या औरत के होते हैं। वो भी चाहते हैं, समाज में लोग उन्हें उनके नाम से पहचानें। शर्मीन कहती हैं, जब उनकी मुलाकात हिना नाम के किन्नर से हुई, तो उसने बड़े तपाक से कहा कि उसे उसके नाम से पुकारा जाए। इसी आत्मविश्वास को शर्मीन ने अपने कैमरे में कैद किया। वो आत्मविश्वास जो हम सब से कहीं छुपा हुआ है।

तस्वीरें बताती हैं, किन्नरों के जज्बात – शर्मीन मानती हैं कि तस्वीरें किसी के जज्बात को बताने का एक जरिया हैं, लेकिन इन किन्नरों कि जिंदगी से वो इतनी मुतासिर हुई हैं कि उन्हें अपना रोल मॉडल मानने लगी हैं। वो अपने दूसरे प्रोजेक्ट भी इसी समाज की जिंदगी पर करना चाहती हैं। उन्हें लगता है कि अपने काम के जरिए वो इस समाज को दुनिया के नजदीक ला सकेंगी।

निष्कर्ष – किन्नर समुदाय के प्रति नफरतों और उदासीनता लोगों के बीच आम हो गई है। आये दिन किन्नर समुदाय के लोगों के साथ मारपीट एक रोजमर्रा की घटना हो गई है । किन्नरों कि समस्याओं पर आधारित है, ट्रान्सजेडर मॉडल मैग्जीन 2017 जैसा कि आप जानते हैं कि किन्नर को अंग्रेजी में ट्रांसजेंडर कहते हैं। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों में अशिक्षा बहुत है और किन्नर समुदाय के लोगों को इसकी वजह से बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसा कि आप जानते हैं ट्रांसजेंडर समुदाय को समाज आज भी अच्छा और अच्छे नजर से नहीं देखता उन्हें अच्छे घर और अच्छे काम बिलकुल नहीं मिलता। ट्रान्सजेंडर समुदाय के लोगों को कम पढ़े–लिखे होने के कारण अच्छी नौकरी नहीं के बराबर मिलती है, जिसकी वजह से उन्हें समाज की ऐसे काम करने को मजबूर होना पढता है, जो कि समाज में मान्य नहीं है। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को अक्सर ट्रेन में भिख मांगना और अपना जीवन यापन करना एक चुनौती है ट्रांसजेंडर समुदाय को मदद देने के लिए भरत कौशिक डॉकयूमेंट्री फिल्म मेक और सामाजिक कार्यकर्ता के द्वारा ट्रांसजेंडर मॉडल मैग्जीन, जो कि ऑनलाइन है उसकी शुरुआत की गई है। मैग्जीन का मुख्य उद्देश्य है कि ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को समाज में समान और सम्मानजनक काम मिले मैग्जीन में हरेक ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों कि तस्वीर और उनके बारे में पोस्ट करके उसे सोशल नेटवर्किंग सोशल मीडिया में डाला जाता है ताँकि ट्रांसजेंडर को उनके योग्यता अनुरूप सम्मानजनक काम और सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हो। ट्रांसजेंडर मॉंडल मैग्जीन में बिहार और देश के अलग– अलग राज्य और विदेशों से भी ट्रांसजेंडर अपनी तस्वीरें और अपनी योग्यता डाल रहे हैं। ट्रांसजेंडर मॉंडल मैग्जीन यह एक साहसिक और क्रांतिकारी पहल है। सामाजिक कार्यकर्ता भरत कौशिक डॉकयूमेंट्री फिल्म मेक 'है और पटना में उन्होंने मैग्जीन कि शुरुआत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों कि मदद के लिए संघर्ष और कठिनाइयों को दूर करने के लिए मैग्जीन कि शुरुआत की है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. किन्नर कथा उपन्यास।
2. किन्नर विमर्श के विविध आयाम।
3. किन्नर विमर्श पत्रिका।
4. डॉ. दिग्विजयय वर्तमान साहित्य में थर्ड जेंडर की प्रासंगिकता।
5. संधु, मधु य थर्ड जेंडर – समाज और साहित्य।
6. विकिपीडिया।

*****